IJAER/July-August 2023/Volume-12/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

"छत्रपति सम्भाजी:पुर्तगालियों के विरूद्ध किए गये प्रथम युद्ध का ऐतिहासिक अध्ययन"

महेश कुमार

प्रवक्ता, श्री शंकर देव आदर्श इण्टर कालेज जावल, बुलन्दशहर

सारांश भारत में यूरोप से आने वाले व्यापारियों में पुर्तगाली व्यापारी सबसे पहले आये। उन्होंने पश्चिमी समुद्रतट पर सन् 1510 में बीजापुर के अदिलशाह सुल्तान से गोवा नगर छीन लिया था और धीरे–धीरे डयू, दमन, बम्बई के बसई, चोल और गोवा द्वीप पर अपना अधिपत्य और प्रभाव बढा लिया था। सन् 1665 में पुर्तगालियों ने बम्बई द्वीप अंग्रेजों को दान में दे दिया था। छत्रपति शिवाजी के शासनकाल में पुर्तगालियों के अधीन उपरोक्त सभी द्वीप प्रसिद्ध सामुद्रिक स्थल थे, यह सब मराठा राज्य के समीप थे। छत्रपति शिवाजी के शासन के अन्तिम वर्षों में पुर्तगालियों और छत्रपति शिवाजी के सम्बन्ध बिगड चुके थे, जब छत्रपति शिवाजी ने सन् 1675 मे अदिलशाह सुल्तान से फौन्दा दुर्ग जीत लिया, और कारवार क्षेत्र के अधिपति बन गये तो उस क्षेत्र के कई महल उनके अधिकार में आ गये, तब उन्होंने गोवा पर आक्रमण करने की योजना बनायी परन्तु मुगलों से युद्ध होने के कारण वह अपनी इस योजना को कार्यान्वित नहीं कर सके। 3 अप्रैल 1680 को छत्रपति शिवाजी के देहान्त के बाद छत्रपति सम्भाजी को उनके उत्तराधिकार के लिए गृह युद्ध की आशंका थी।

प्रस्तावना इसी समय सम्राट औरंगजेब दक्षिण में आ चुका था और उसका मूल उद्देश्य अपने विद्रोही पुत्र शहजादा अकबर को बन्दी बनाकर दण्डित करना और परम्परागत मराठा शत्रु छत्रपति सम्भाजी की शक्ति का उन्मूलन करना था। प्रारम्भ में उसने कोंकण में छत्रपति सम्भाजी के अधिकृत प्रदेश को हस्तगत करना चाहा। क्योंकि यहीं से छत्रपति सम्भाजी और शहजादा अकबर सम्राट औरंगजेब के विरूद्ध धावे करते थे। 20 जनवरी 1682 को सम्राट औरंगजेब ने गोवा के मुगल राज्यपाल को पत्र लिखा जिसमें उसने यह माँग की कि मराठा राजा छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध पुर्तगालियों को जो भी सहायता दे सके उसे वह दे और इसके लिये चर्चा हेतु सम्राट औरंगजेब ने शेख मुहम्मद को अपना दूत बनाकर गोवा के पुर्तगाली राज्यपाल के पास भेजा। इसके फलस्वरूप पुर्तगालियों ने यह स्वीकार कर लिया कि पुर्तगाली राज्य से मुगल सेना खाद्यान्न खरीद सकती है। सूरत से आने वाला मुगल जहाजी बेड़ा बिना किसी व्यवधान के पुर्तगाली राज्य के क्षेत्रों में से आ सकेगा। सम्राट औरंगजेब के राजदूत द्वारा बार–बार मॉग करने पर भी पुर्तगालियों ने मराठों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की वास्तविकता तो यह थी कि इस समय पुर्तगालियों को यह साहस नहीं हुआ कि वह छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध सम्राट औरंगजेब से मित्रता बनाये परन्तु गुप्त रूप से दिसम्बर 1682 से ही पुर्तगालियों ने छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध मुगलों को सहायता देना प्रारम्भ कर दिया था और मुगल जहाजी बेडे में सम्मिलित होने के लिये पुर्तगाली जहाज भी तैयार रखें। इन घटनाओं के कारण छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों से युद्ध छेड दिया। छत्रपति सम्भाजी और पुर्तगालियों के युद्ध के बीच अधोलिखित कारण भी थे।[1]

पुर्तगालियों द्वारा मराठों के विरूद्ध औरंगजेब की सहायता करना – छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध सम्राट औरंगजेब द्वारा छेडे गये सैनिक संघर्ष में पुर्तगालियों ने सम्राट औरंगजेब को सहायता व सहयोग दिया। पुर्तगालियों ने अपने क्षेत्र से मुगल सेना के लिये खाद्यान्न की पूर्ति व मुगल जहाजी बेडे को मराठा जहाजी बेडे का सामना करने में लिये सूरत से पुर्तगाली क्षेत्र में से जाने आने दिया और उसे अपने पुर्तगाली जहाजों से सहायता प्रदान की मुगलों का यह जहाजी बेडा थाणा से कल्याण तक चला गया इससे छत्रपति सम्भाजी पुर्तगालियों से अत्याधिक कुपित हो गये। पुर्तगालियों द्वारा छत्रपति सम्भाजी की चौथ की माँग अस्वीकृत – सन् 1682 में रामनगर के शासक नारायण देव थाणे को पुर्तगाली से चौथ व अन्य कर देते थे और उसे चौथिया राजा कहते थे। छत्रपति सम्भाजी ने इस चौथिया राजा का एक बडा प्रदेश छीनकर अपने राज्य में मिला लिया था। इसी आधार पर छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों से चौथ व अन्य करों की माँग की। यह कर भिन्न–भिन्न ग्रामों में 17 प्रतिशत, 14 प्रतिशत, 12 प्रतिशत के हिसाब से लगाये गये थे।[2] पुर्तगालियों ने छत्रपति सम्भाजी को यह कर देने से इन्कार कर दिया। छत्रपति सम्भाजी को पुर्तगालियों ने उत्तर दिया कि वह इन करों को तभी देंगे जब वे समस्त रामनगर के स्वामी बन जायें। इससे मराठे अत्याधिक रूष्ट हो गये। उपरोक्त विभिन्न कारणों से मराठा पुर्तगाली युद्ध अनिवार्य था। मराठा पुर्तगाली युद्ध 1683–84– छत्रपति सम्भाजी पुर्तगालियों से अत्याधिक कुपित हो गये थे और उन्होंने पुर्तगालियों के विरूद्ध संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। जब मुगल जहाजी बेडे को थाणा से कल्याण तक पुर्तगालियों द्वारा जाने दिया गया तब छत्रपति सम्भाजी ने आगे आने वाले खतरे का आभास कर अनेक पुर्तगाली ग्रामों को जला दिया और 8 फरवरी 1683 से पहले दो पुर्तगाली दुर्गों पर अधिकार कर लिया। अब उन्होंने यह योजना बनाई

कि सूरत जाने वाले मुगल जहाजों को गोलीवारी करके रोका जाये 15 अप्रैल 1683 को छत्रपति सम्भाजी ने 1200 पैदल सैनिकों की सहायता से तारापुर पर आक्रमण किया और वहाँ की पुर्तगाली बस्ती में आग लगा दी इसके बाद दमन से बेसीन तक के क्षेत्र में मराठों ने अनेक पुर्तगाली ग्रामों पर आक्रमण किया घनी बस्ती वाले ग्रामों में आग लगा दी और कुछ जहाजों को तथा दो जेसुइट पादरियों को बन्दी बना लिया अब पुर्तगालियों ने भी प्रतिहिंसा की भावना से छत्रपति सम्भाजी को जिन्दा पकडने की योजना बनाई थी। भट ग्राम में नर्वे नामक स्थान पर पंचगंगा नामक नदी बहती है यह नदी धार्मिक महत्व रखती है इसीलिये वर्ष में एक बार गोकुल अष्टमी के दिन यहाँ हजारों हिन्दू पवित्र स्नान के लिये एकत्रित होते हैं। पंचगंगा नदी के दक्षिण तट पर मराठों का नर्वे ग्राम था और उत्तरी तट पर पुर्तगालियों का दिवडी द्वीप था। छत्रपति सम्भाजी ने यह घोषणा की थी कि वह 12 अगस्त 1683 को पवित्र स्नान के लिए पंचगंगा नदी तट पर जायेंगे इस पर पुर्तगाली राज्यपाल ने नदी तट पर अपने क्षेत्र से आक्रमण कर छत्रपति सम्भाजी को जीवित बन्दी बनाने की योजना बनायी थी परन्तु छत्रपति सम्भाजी ने अपनी यह तीर्थयात्रा निरस्त कर दी इसलिये पुर्तगालियों की छत्रपति सम्भाजी को बन्दी बनाने की योजना असफल हो गयी।[3]

चोल और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों पर मराठा आक्रमण और विजय पश्चिमी समुद्र तट पर कोलावा जिले में चोल और रेवदण्डा बन्दरगाह है। सन् 1580 से यह पुर्तगालियों के अधीन थे। पुर्तगालियो ने चोल की अच्छी तरह से किलेबन्दी कर उसे श्रेष्ठ बन्दरगाह भी बना लिया था। इसलिये छत्रपति सम्भाजी ने इसके महत्व को समझकर 22 जुलाई 1683 को 2000 अश्वारोहियों और 6000 पैदल सैनिको से चोल पर आक्रमण कर दिया और उसे घेर लिया बाद में इसके समीप ही कोरलाई किले को भी घेर लिया और उसे भी जीत लिया सितम्बर 1683 में पेशवा नीलकण्ठ मोरेश्वर के नेतृत्व में मराठों ने पुर्तगालियों के उत्तरी क्षेत्र में अनेक पुर्तगाली गॉवों पर आक्रमण कर उनको जला दिया। गोवा के पुर्तगाली राज्यपाल ने चोल की रक्षा के लिये सैनिक भेजे और मुगलो से भी सैनिक सहायता की याचना की गयी फलतः 400 मुगल सैनिक चोल की रक्षा के लिये भेजे गये। इसी बीच छत्रपति सम्भाजी ने सालसिट और वरदेज पर आक्रमण कर उनका विध्वंस कर दिया और अश्वारोहियों और हथियों की एक विशाल सेना से गोवा पर आक्रमण करने की योजना बनाई इसीलिये चोल का घेरा ओर कड़ा किया गया और इस समय सन् 1683–84 में मराठों ने पुर्तगालियों के अधीनस्थ अनेक नगरों व गाँवो पर आक्रमण कर उनको अपने अधीन कर लिया। पुर्तगाली राज्य के उत्तरी क्षेत्र में मराठों ने चेम्बूर : टुलोजा, माहिम, सरेगाँव, सुपराह आदि अनेक महत्वपूर्ण स्थानों पर अधिकार कर लिया और अनेक पुर्तगालियों को बन्दी बना लिया और इसी समय बेसीन से मदनापुर तक के क्षेत्र को जीत लिया गया जिससे घबडाकर अनेक पुर्तगाली सैनिक अपनी जान बचाकर भाग गये। भारत में शायद पुर्तगालियों की इतनी किरकिरी कभी नहीं हुयी जितनी छत्रपति सम्भाजी के आक्रमणों से हो रही थी। 1683 से चोल में मराठों का जो घेरा चल रहा था। उसका सैनिक दबाव कम करने के लिये तथा मराठों का ध्यान चोल से हटाने के लिये गोवा के राज्यपाल ने मराठों के फौन्डा दुर्ग पर आक्रमण करने की योजना बनाई 27 अक्टूबर 1683 को उसने 3200 सैनिकों तथा कुछ अश्वारोहियों की सेना व भारी तोपों के साथ गोवा से प्रस्थान किया और शीघ्र ही फौंन्डा पहुँचकर उसे घेर लिया और 1 नवम्बर 1683 को उसने दुर्ग पर भयंकर गोलीवारी प्रारम्भ कर दी इस समय फौन्डा दुर्ग में सरनौबत पेसाजी कंक और उसके पुत्र कृष्णाजी के नेतृत्व में कुल 600 मराठा सैनिक सुरक्षा के लिये तैनात थे। इन्होंने पुर्तगाली आक्रमण का बडी वीरता शौर्य व सहास से सामना किया। पाँच दिनों तक निरन्तर भयंकर गोलीबारी करने पर भी पुर्तगाली सेना फौन्डा दुर्ग में प्रवेश नहीं कर नहीं सकी। इसी बीच छत्रपति सम्भाजी स्वंय फौंन्डा दुर्ग की सहायता के लिये राजपुर से 800 सैनिकों के साथ फौन्डा दुर्ग के बहार पहुँच गये और उन्होंने 9 नवम्बर 1683 को पुर्तगालियों की भीषण गोलीबारी और दुर्ग की दीवारों पर चढने के कठिन प्रयत्नों के बावजूद छत्रपति सम्भाजी ने अपने 600 सैनिक किले की सुरक्षा के लिये प्रवेश करा दिये। इससे घिरे हुये मराठा सैनिकों का उत्साह अधिक बढ़ गया। इसी बीच भयंकर मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गयी। तूफानी मौसम ठण्डी हवाओं और मराठों के निरन्तर प्रत्याक्रमणों के कारण पुर्तगाली घेरा बन्दी निरर्थक हो गयी और जब पुर्तगाली सेना निराश होकर 10 नवम्बर 1683 को घेरा उठाकर सेना सहित लोटना चाह रही थी तब मराठों ने सामूहिक रूप से एकत्रित होकर पुर्तगाली सेना पर आक्रमण कर दिया फलतः पुर्तगाली सेना चावल के 300 बोरे और अन्य खाद्यान्न 200 बैल तथा अन्य युद्ध सामग्री छोडकर पीछे लौट रही थी और जब 11 नवम्बर को पुर्तगाली सेना नदी पार कर रही थी तब वीर मराठों ने पुर्तगाली सेना पर भयंकर आक्रमण किया और इस आक्रमण में दुनिया की श्रेष्ठ जल सेना के 200 जवान मारे गये। पुर्तगाली वायसराय जो स्वयं इस समय उपस्थित था। मराठों के आक्रमण का शिकार हो गया। दो बार मराठों ने उस पर भालों से बार किया और दोनों ही बार वह बच गया इसी राज्यपाल ने छत्रपति सम्भाजी को जीवित पकडने की योजना बनाई थी, इसीलिये मराठों ने इसका बदला लिया फौन्डा के इस घेरे में छत्रपति सम्भाजी का वीर सेनानायक कृष्णाजी कंक मारा गया पर मराठों ने पुर्तगाली सेना को बडे सहास और अपनी युद्ध नीति से परास्त कर दिया और बचे पुर्तगाली सैनिक गोवा लौट गये।[4]

सेण्ट स्टीफन द्वीप पर मराठों का अधिकार – सेण्ट स्टीफन द्वीप गोवा नगर से एक नदी की धारा से पृथक हो गया था। यह इस समय पुर्तगालियों के अधीन था इस द्वीप पर पुर्तगालियों ने एक दुर्ग भी बना लिया था इस द्वीप का यह महत्व

था कि इस पर अधिकार करने के बाद गोवा पर सरलता से आक्रमण किया जा सकता था इसीलिये 24 नवम्बर 1683 को 8 बजे रात्रि में छत्रपति सम्भाजी ने अपने 40 सैनिकों को इस किले में उतार दिया और इन्होंने दुर्ग में प्रवेश कर वहाँ के कप्तान, तोप खाने के अधिकारी और केई पुर्तगाली वर्णसंकरों को मार डाला इसके बाद अन्य मराठा सैनिक भी इस किले में गुप्त रूप से पहुँच गये। दूसरे दिन 25 नवम्बर 1683 को गोवा के वायसराय ने 400 सैनिकों के साथ किले के मुख्य दरवाजे से प्रवेश किया और उस स्थान तक पहुँच गये। जहाँ गिरजाघर बना हुआ था। इस द्वीप पर तैनात मराठा सैनिकों ने इन पुर्तगाली सैनिकों का सामना किया और जो युद्ध हुआ उसमें अनेक पुर्तगाली सैनिक मारे गये। चार मराठा अश्वारोहियों ने पुर्तगाली राज्यपाल पर अपनी तलवारों से आक्रमण कर उसे घायल कर दिया और वह उसे बन्दी ही बना लेते पर नामक सैनिक ने उसे बचा लिया अपनी पराजय के बाद घायल राज्यपाल अपने बचे हुये साथियों के साथ गोवा लौट गया। वीर मराठों ने द्वीप और किले पर अधिकार कर लिया। पुर्तगालियों की उनकी राजधानी के समीप ही यह बडी लज्जा और अपमानजनक पराजय थी। पिसुरलेनकर के शब्दों में छत्रपति सम्भाजी की इस विजय ने पुर्तगालियों के समस्त कोंकण प्रदेश को जीतने की महत्वाकांक्षा को चूर–चूर कर दिया। इस विजय के बाद छत्रपति सम्भाजी गोवा शहर पर आक्रमण करना चाहते थे। परन्तु समुद्र में अधिक ज्वार के कारण मराठा सेना गोवा नगर तक नहीं पहुँच सकी। परन्तु 11 दिसम्बर 1683 को छत्रपति सम्भाजी ने सफलतापूर्वक सालसिट पर आक्रमण किया और 1000 मराठा अश्वारोहियों और 3000 पैदल सैनिक सालसिट में प्रवेश कर गये और पुर्तगालियों को परास्त कर दिया और उनका सामान मराठा सैनिकों ने छीन लिया और केई को मौत के घाट उतार दिया। अपनी विजय के बाद मराठों ने सालसिट में गिरजाघरों को ध्वस्त कर दिया और केई मकानों को जला दिया। इसके बाद मराठा सैनिक असोलना में प्रवेश कर गये वहॉ के पुर्तगाली सैनिक मराठों से इतने आतंकित हो गये कि वह अपना गोला बारूद समुन्द्र में फेंककर भाग खडे हुए मराठों ने सालसिट क्षेत्र में रायचूर और भरगाँव दुर्ग को छोडकर अन्य सभी दुर्गों पर आक्रमण कर उन्हें जीत लिया। सालसिट के सभी गिरजाघरों में युद्ध सामग्री व खाद्यान्न को छोडकर पुर्तगाली सैनिक रणक्षेत्र से पलायन कर गये। इनसे पहले ही पुर्तगाली पादरी मराठों की बढती हुयी शक्ति से आंतकित होकर भाग खडे हुए थे।

मराठों की बरदेज विजय तथा अन्य दुर्गों पर अधिकार – समुद्र–तट पर छोटे से प्रायद्वीप के समान वरदेज एक नगर और दुर्ग है। 11 दिसम्बर 1683 को ही मराठा सेना ने बरदेज पर भी आक्रमण किया और वह उसमें प्रवेश कर गयी। यहाँ से पुर्तगाली सैनिक और पहरेदार पलायन कर गये और उन्होंने मराठों के प्रवेश को रोकने का किंचित भी प्रयास नहीं किया इसके बाद मराठों ने थिये (त्रिविम) दुर्ग को घेर लिया और दस दिन के घेरे के बाद उसे भी जीत लिया इसके बाद मराठों ने दो अन्य दुर्गों पर भी अधिकार कर लिया और वहाँ के पुर्तगाली सैनिकों ने कायरता से आत्म समर्पण कर दिया। इस पर मराठा सैनिकों ने उनको अपमानित करके उनके हथियार छीन लिये इसके बाद कुछ अन्य पुर्तगाली दुर्गों पर भी अधिकार कर लिया गया। मराठों की इस बढती हुई विजयों से गोवा के राज्यपाल को यह भय हो गया कि छत्रपति सम्भाजी गोवा द्वीप पर भी आक्रमण कर उसे छीन लेंगे इस समय पुर्तगालियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी थी जिससे अत्यन्त घोर निरासा में गोवा का राज्यपाल बोन जेजुइस के गिरजे में सेण्ट जेवियर से प्रार्थना करने गया और वहाँ सेण्ट जेवियर की प्रतिमा के हाथों में अपना राजदण्ड देकर उसे आत्मसर्पण कर उसकी अनुकम्पा की याचना की और अपनी सुरक्षा के लिये प्रार्थना की। परन्तु इसी समय गोवा की सीमा पर मुगल सेना सम्राट औरंगजेब के जेष्ठ पुत्र शाहआलम के अधीन एक लाख सैनिकों के साथ गोवा की सीमा पर पहुँच गया था यह मुगल सेना और पुर्तगाली सेना दोनों मिलकर छत्रपति सम्भाजी को घेर सकते थे। और छत्रपति सम्भाजी की सभी विजयों को समाप्त कर सकते थे। औरंगजेब जो इस समय औरंगाबाद में विशाल सेना सहित आ धमका था। वह भी छत्रपति सम्भाजी की विजयों से चकित हो गया था। जब उसे यह सूचना मिली कि छत्रपति सम्भाजी गोवा पर आक्रमण कर उसे जीतने और अपने राज्य में मिलाने की योजना बना रहा है तब गोवा के महत्व और छत्रपति सम्भाजी की शक्ति की वृद्धि को समझकर सम्राट औरंगजेब भी औरंगाबाद से चलकर सेना सहित गोवा के समीप अहमदनगर तक आ गया था। इससे छत्रपति सम्भाजी और भी चिंतित हो गये। इसलिये छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों से सन्धि वार्ता आरम्भ करने का निश्चय किया।[5]

पुर्तगालियों से प्रस्तावित सन्धि सन् 1684– छत्रपति सम्भाजी पुर्तगालियों से तत्काल संघर्ष को टालना चाहते थे। उधर पुर्तगालियों को भी मराठों से हो रहे युद्ध में जन धन की अपार हानि हो रही थी उनके अनेक दुर्ग व विशाल क्षेत्रों पर मराठों का अधिकार हो गया था। उनकी अपमानजनक पराजयों से उनकी प्रतिष्ठा गिर गयी थी इसलिये वह भी छत्रपति सम्भाजी से समझौता करना चाहते थे। इसलिये छत्रपति सम्भाजी ने अपनी ओर से कविकलश को तथा पुर्तगालियों ने मेन्युअल सर पेवडीएलबुकर्म को अपना राजदूत बनाकर भेजा। कविकलश के साथ शहजादा अकबर था और मेन्युअल सर (पेवडी एलबुकर्म) के साथ मनूची था 25 जनवरी से 4 फरवरी 1684 तक दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों में सन्धि वार्ताऐं होने के बाद सन्धि की निम्न शर्तें निश्चित की गयी जो इस प्रकार है।

1. छत्रपति सम्भाजी वह क्षेत्र और किले और भूमि जो उन्होंने पुर्तगालियों से हथियार, तोपों व बन्दूकों सहित पुर्तगालियों को लौटा देंगे।

2. युद्ध से पहले और बाद में बन्दी बनाये गये जहाज उनके स्वामियों को उनके माल–असबाव सहित दोनों पक्ष लौटा देगें।
3. दोनों ही पक्ष युद्ध बन्दियों को मुक्त कर देंगे।
4. रामनगर के राजा को बेसिन से गवखण्डी और दमन से चौथाई का भुगतान किया जाए। इसके बदले में छत्रपति सम्भाजी उस क्षेत्र की सुरक्षा करेंगे।
5. दोनों पक्ष एक दूसरे के क्षेत्रों में व्यापार कर सकेंगे। और इसके लिये आने जाने की छूट दी जायेगी।
6. पुर्तगाली अपने खाद्यान्न से लदे जहाजों को अपनी सुरक्षा और संरक्षण में मुगल सेना के लिये नहीं जाने देंगे। जहॉ पुर्तगालियों के पास तोपखाना व बन्दूक नहीं होंगे वहॉ यह शर्त बाध्य नहीं होगी।
7. कोलगॉव की किलेबन्दी मराठे नहीं करेंगे।
8. जिन देसाइयों ने छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध विद्रोह किया था और पुर्तगालियों की सहायता की थी उनको क्षमा कर दिया जायेगा।
9. छत्रपति सम्भाजी पुर्तगाली क्षेत्र के आसपास कोई दुर्ग निर्मित नहीं करेंगे।

गोवा का पुर्तगाली वायसराय यह सब शर्त स्वीकार करने को तैयार था। मराठा पक्ष के कविकलश और शहजादा अकबर भी इन शर्तों को स्वीकार करना चाहते थे और वह इस सन्धि के पक्ष में भी थे। परन्तु नीलोपन्त पेशवा और केशव पण्डित दोनों ही इस सन्धि के विरोध में थे।छत्रपति सम्भाजी ने भी अप्रत्यक्ष रूप से इन शर्तों को नहीं माना था। क्योंकि अभी उन्होंने कोलगॉव की किलेबन्दी को समाप्त नहीं किया था और न भीमगढ के युद्धबंदियों को मुक्त किया इसलिये पुर्तगाली राज्यपाल ने सन्धि की इन शर्तों को स्वीकार कराने के लिये अपने कुछ पुर्तगाली अधिकारी व दो पादरी रामकृष्ण नायक सहित छत्रपति सम्भाजी के पास मार्च 1684 में रायगढ़ भेजे। रायगढ़ में दोनों पक्षों की वार्ता में उपरोक्त सन्धि में छत्रपति सम्भाजी और उनके मन्त्रियों ने दो शर्त और जोड देनी चाही। पुर्तगाली अंजद्वीप नामक टापू से हट जायेंगे और उसे खाली कर देंगे। छत्रपति सम्भाजी के लिये पुर्तगाली उपहार भेजेंगे जब इन दोनों शर्तों को स्वीकार करने के लिये पुर्तगाली दूत मण्डल तैयार नहीं हुआ तो छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगाली राज्यपाल से इनको स्वीकार कराने के लिये अपने दो अधिकारी रंगाजी लक्ष्मीधर और सिधोजी फर्जन्द को दिसम्बर 1684 में भेजा और 20 जनवरी 1685 को उन्होंने राज्यपाल से भेंट की जब यह गोवा में ही थे तभी 23 फरवरी 1685 को मराठों ने पुनः बरदेज पर आक्रमण कर दिया। इससे राज्यपाल कुपित हो गया और उसने विवाद ग्रस्त दोनों शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया और अन्त में इस प्रकार प्रस्तावित सन्धि समाप्त हो गयी।

युद्ध का पुनः प्रारम्भ सन् 1685 – जब संधि वार्तायें चल रहीं थीं तब शाहआलम सेना सहित गोवा की सीमा से अन्यत्र प्रस्थान कर गया इस स्थिति का लाभ उठाकर छत्रपति सम्भाजी ने गोवा पर आक्रमण करने के लिये फौन्डा में पुनः अपनी सेनायें एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया इसके अतिरिक्त मराठों ने पुर्तगालियों की चावल से लदी केई नावें और सालसिट क्षेत्र में लकडी के लट्ढों से लदे कुछ जहाज भी लूट लिये थे इससे डरकर पुर्तगालियों ने भी अपनी सुरक्षा की तैयारी आरम्भ कर दी थी। पुर्तगाली राज्यपाल ने छत्रपति सम्भाजी द्वारा जीते हुये पुर्तगाली क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने के लिये प्रयास किया परन्तु वीर मराठों ने प्रत्याक्रमण कर 400–500 पुर्तगाली सैनिकों को मार डाला। अब पुर्तगालियों व मराठों का जो संघर्ष प्रारम्भ हुआ वह छत्रपति सम्भाजी के शासन के अन्त तक चलता रहा। पुर्तगालियों के विरूद्ध अपने अभियान के सिलसिले में छत्रपति सम्भाजी ने जून 1684 में चोल पर आक्रमण किया। परन्तु पश्चिमी किलेबन्दी पर उनके इस आक्रमण का कुछ भी प्रभाव न पडा। गोवा के वायसराय ने अपने प्रतिरोधों को प्रतिरक्षात्मक परिधि तक ही रहने दिया वरन अक्टूबर में एक भारी सेना जुटाकर जिसमें 1200 यूरोपियन सैनिक थे। छत्रपति सम्भाजी के क्षेत्रों पर आकृमण करके अपने कुछ दुर्ग अधिकार में कर लिये पुर्तगालियों की उस सेना ने मराठा सैनिकों से भी कहीं अधिक वर्बरता दिखाई। उन्होंने प्रतिरक्षाहीन गांवों को आग लगा दी और शस्त्रहीन ग्रामीणों को मौत के घाट उतार दिया और मन्दिरों को तोडने फोडने के साथ अपने बन्दियों को शक्ति के बल पर धर्म परिवर्तन करने पर भी विवश किया। इसी समय मराठा पुर्तगाली संघर्ष में पुर्तगालियों ने छत्रपति सम्भाजी के अधीनस्थ देसाइयों और सावन्तो को छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध विद्रोह करने के लिये भडकाया उन्होंने 8 फरवरी 1685 को देसाइयों के साथ छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध गुप्त समझौता किया और विद्रोही देसाइयों को धन और जहाज देने का भी वचन दिया। फलतः इन विद्रोही देसाइयों ने मराठा राज्य के कोकण क्षेत्र में अनेक स्थानों को लूटा और विध्वंस किया कारवार, साखली, डिचोली, ओर फौन्डा के देसाईयों तथा कुदाल के खेम सांवत, तन सांवत और रामदल्लवी ने छत्रपति सम्भाजी के साथ विश्वासघात करके पुर्तगालियों को उपरोक्त किले सौंप दिये तथा छत्रपति सम्भाजी के अधीनस्थ किलों और कुछ क्षेत्रों पर आक्रमण कर उनको लूटा और उनको नष्ट और वीरान किया। पुर्तगाली राज्यपाल ने अपनी शक्ति भर से छत्रपति सम्भाजी के क्षेत्रों पर अत्याचार किया और मराठा राज्य को तहस नहस करने का हर सम्भव प्रयास किया। उसने छत्रपति सम्भाजी द्वारा अंजद्वीप पर किले बंदी करवाने के विचार का बदला लिया और अपनी सुसज्जित जल सेना को छत्रपति सम्भाजी के जलबेडे को तवाह कर देने तथा कारवार का

व्यापार केन्द्र बर्बाद कर देने का आदेश दिया। राज्यपाल ने स्वयं सेना का नेतृत्व किया ओर फौन्डा पर घेरा डालकर बैठ गया। परन्तु इसी समय मराठा राज्य पर मुगलों के आक्रमण होने प्रारम्भ हो गये थे इसलिये मराठों की अधिकतर सेना मुगल सेना से युद्ध कर रही थी। फिर भी सेना लेकर छत्रपति सम्भाजी पुर्तगालियों की ओर बडे। फौन्डा दुर्ग आते ही अपनी अल्प सेना की परवाह किये बगैर वह पुर्तगालियों पर पीछे से टूट पडे। फौन्डा दुर्ग का घेरा यद्यपि पुर्तगालियों ने अत्यन्त प्रबल कर रखा था। यदि थोडा प्रयास पुर्तगालियों द्वारा और किया गया होता तो शायद वह पुर्तगालियों को मिल भी जाता परन्तु राज्यपाल ने उसे पश्चिमी निगाह से देखा और भारतीय युद्ध की परिस्थितियों से अनिभिज्ञ राज्यपाल को अपने आने जाने वाले मार्ग का भय हो गया। राज्यपाल ने सोचा कि इस अवसर पर गोवा पर आक्रमण हो सकता है। अतः उसने सेनाओं को लोटने का आदेश दिया। वह वापिस लोट जाने में सफल रहे परन्तु उनके बन्दूक खेमे तथा अन्य युद्ध सामृग्रियाँ छत्रपति सम्भाजी के हाथ लगीं तथा पुर्तगालियों के 1200 सैनिक खेत रहे। जिनमें 200 यूरोपियन थे। गोवा को मुख्य भूमि से पृथक करने वाले छिछले जल के किनारे आकर छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों का पीछा छोडा। परन्तु वह उसी क्षण पुर्तगालियों को समाप्त करने पर तुल गये। पुर्तगालियों को इस छिछले जल क्षेत्र का अच्छा ज्ञान था। और उन्होंने पहले से नावे और अपने सैनिको को दूसरे किनारे पर एकत्रित कर लिया था। अतः छत्रपति सम्भाजी की अश्वसेना के द्वारा किया गया आक्रमण पुर्तगाली सेना ने विफल कर दिया। छत्रपति सम्भाजी ने अपने सैनिकों को पुनः उत्साहित किया और छिछले जल समूह को पार करने की आज्ञा दी पद्यापि स्वंय छत्रपति सम्भाजी ने इस सेना का नेतृत्व किया और स्वयं तब तक प्रयास में लगे रहे जब तक कि उनका घोडा तैरने में सफल होता रहा। परन्तु वर्षा ऋतु के असीम जल के थपेडों ने उनको अपने प्रयास में सफल नहीं होने दिया। इस अवसर पर अपनी बहादुरी से छत्रपति सम्भाजी ने सब को आश्चर्य में डाल दिया। उनके पिता की महान तलवार भवानी ने इस दिन की तरह कभी अपना जौहर नहीं दिखाया परन्तु अपनी मूढ़ता से छत्रपति सम्भाजी ने उसी क्षण गोवा प्रायद्वीप पर अधिकार करने की योजना बनाई। और इस कार्य के लिये नावे लाने का आदेश दिया। उनके 200 आदमी इस कार्य के लिये भेजे गये जबकि पुर्तगाली नावों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और मराठों के आने जाने का मार्ग अवरूद्ध कर दिया गया। पुर्तगाली राज्यपाल की हारी हुई और अपमानित सेना उन 200 मराठों पर टूट पडी। वह बिचारे इस आक्रमण से घबरा गये और प्राण रक्षा के लिये डूब कर मर गये। या पुर्तगाली सैनिकों के हाथों मारे गये। बहुत कम सैनिक इस अभियान में पुर्तगाली सेना से अपने प्राणों की रक्षा करने में समर्थ हुये। चोल का घेरा बिना किसी विशेष सफलता के उसी प्रकार पडा रहा। परन्तु पुर्तगालियों को सफलता नहीं मिली पर करंजा पर छत्रपति सम्भाजी का अधिकार हो गया और बराबर एक वर्ष तक वह मराठों के ही अधिकार में रहा। दामन और बसोंढ के बीच के अनेक पुर्तगाली क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट कर दिया गया। इस प्रकार मराठों से परेशान राज्यपाल ने छत्रपति सम्भाजी के सम्मुख पुनः शान्ति प्रस्ताव रखा। परन्तु छत्रपति सम्भाजी ने पाँच करोड पगौडा क्षतिपूर्ति के रूप में पुर्तगालियों से मांगा इसी कारण वार्ता तत्काल भंग हो गई। कोंकण में व्यस्त अल्पमात्रा में सवार सैनिकों को छोडकर हमेशा की तरह मराठा सवार सेना उपरी क्षेत्रों में लूट पाट के लिये तितर बिजर हो गयी थी। जो अच्छे मौसम में भी इसी प्रकार व्यस्त रही। सिर्फ एक बार औरंगाबाद की एक सेना ने व्यर्थ ही उसका पीछा करने का प्रयास किया। इन सेनाओं ने प्रत्येक आक्रमण और प्रत्याक्रमणों या हार जीत का विवरण देना संम्भव नहीं छत्रपति सम्भाजी की मराठा सेना चारों तरफ से मुगल सेना के आक्रमणों का सामना कर रही थी इसीलिये पुर्तगालियों की पराजित अपमानित सेना में भी स्फूर्ति आ गयी और उसने छत्रपति सम्भाजी के अन्तिम समय तक अपने आक्रमण मराठा राज्य पर जारी रखे और मराठों ने भी पुर्तगाली किलों पर अपने आक्रमण जारी रखे। लेकिन पूर्ण रूप से विजय किसी को नहीं मिली।

निष्कर्ष जब सम्राट औरंगजेब दक्षिण में विद्रोही पुत्र अकबर को पकडने और उसे दण्डित करने के लिये मराठा शक्ति के उन्मूलन के लिए दक्षिण आया और उसका ज्येष्ठ पुत्र शाह आलम पुर्तगाली सीमा तक पहुँच गया तब छत्रपति सम्भाजी के सामने मुगल पुर्तगाली गठबन्धन का खतरा उत्पन्न हो गया यह भी सम्भावना थी कि पुर्तगाली क्षेत्र में ही मुगल सेना उनको घेर ना ले। इस लिये तत्काल छत्रपति सम्भाजी अपनी राजधानी वापिस लौट आये। मुगल सेना न तो उनसे युद्ध कर सकी और ना पीछा ही कर सकी अब छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों से सन्धि के लिये राजदूतों का आदान प्रदान और लम्बी वार्ताऐं प्रारम्भ की छत्रपति सम्भाजी ने सन्धि में नवीन शर्तें जोडने और विलम्ब करने की नीति अपनाई। उन्होंने जनवरी 1684 में सन्धि वार्ताऐं प्रारम्भ की वह मई 1685 तक चलती रही। एक वर्ष चार माह की अवधि विचार–विनिमय और सन्धि की शर्तों को निश्चित करने में ही लग गयी। वह केवल समय चाहते थे। जिससे पूर्ण सैनिक तैयारियों करके वह पुर्तगालियों का ही नहीं अपितु मुगलों के नवीन खतरे का भी सामना कर सकें। पुर्तगालियों ने छत्रपति सम्भाजी के प्रति दुहरी नीति अपनाई। एक ओर तो वह छत्रपति सम्भाजी से सन्धि वार्ताऐं करते रहे और राजदूतों का आदान प्रदान कर रहे थे तो दूसरी और वह मुगलों से भी छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध गठबन्धन कर रहे थे और अन्त में उन्होंने सम्राट औरंगजेब को छत्रपति सम्भाजी के विरूद्ध सैनिक सहायता व सहयोग देना स्वीकार कर लिया और इसके बदले कोंकण का प्रान्त मुगलों से प्राप्त करने का प्रयास किया। छत्रपति सम्भाजी ने पुर्तगालियों की इस नवीन नीति का सामना

पुर्तगालियों के विरूद्ध पुनः सैनिक अभियान और युद्ध प्रारम्भ करके दिया। यह युद्ध छत्रपति सम्भाजी के शासन के अन्तिम समय तक चलता रहा। जिसमें अधिक हानि पुर्तगालियों की ही हुई ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुंसिफ देवी प्रसाद जी – औरंगजेबनामा–हिन्दी अनुवाद भाग 1, 2, 3 पृ0 67
2. मुल्ला नुसरती – तारीख–ए–इस्कन्दरी (सम्पादक देवी सिंह चौहान (प्रकाशक महाराष्ट्र भाषा सभा 1969)पृ0 34
3. बी.एस.बेन्द्रे – कुतुबशाही ऑफ गोलकुण्डा पृ0 79
4. मल्हारराव चिटणिस विरचित श्रीमंत छत्रपति शम्भाजी महाराज (सम्पादक के.एन. साने)पृ0 92
5. कबीन्द्र परमानन्द शिवभारत मराठी अनुवादक सम्पादक और प्रकाशक एस. एम. दिवेकर बम्बई सन 1927पृ0 123
6. सीर मुती खरान – मराठा पाण्डुलिपि एशियाटिक रिसर्च पृ0 56